26 जनवरी 2021 का उद्बोधन

प्रो. साकेत कुशवाहा
कुलपति

सुप्रभात !

राजीव गाँधी विश्वविद्यालय के सम–कुलपति प्रो. मित्रा जी, कुलसचिव डॉ. एन. टी. रिकम जी, संकायाध्यक्ष गण, विभागाध्यक्ष गण, प्रांगण में उपस्थित समस्त प्राध्यापक, अधिकारी, कर्मचारी, शोधार्थी, विद्यार्थी, राजीव गाँधी विश्वविद्यालय परिसर माध्यमिक विद्यालय से आए छोटे–छोटे बच्चे, उनके अध्यापक तथा अन्य सभी उपस्थित जनों को मैं साकेत कुशवाहा, देश के राष्ट्रीय पर्व 72वें गणतंत्र दिवस के पुनीत अवसर पर अपनी तरफ से एवं विश्वविद्यालय की ओर से आपसबको हार्दिक बधाई तथा शुभकामनाएँ देता हूँ।

मैं सर्वप्रथम देश के सभी स्वतंत्रता सेनानियों को प्रणाम करता हूँ जिनके बलिदान व संघर्ष के परिणामस्वरूप ही आज हम स्वतंत्र देश के नागरिक होने के स्वाभिमान को जी रहे हैं। साथ ही मैं राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी, संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अम्बेडकर, अंतरिक्ष वैज्ञानिक डॉ. विक्रम साराभाई, आणुविक शोध के लिए डॉ. होमी भाभा, अभियांत्रिकी के क्षेत्र में एम. विश्वैश्वरैया, कृषि वैज्ञानिक एम. एस. स्वामीनाथन, महान शिक्षाशास्त्री डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णणन जैसे आधुनिक भारत के दिशानिर्देशकों एवं निर्माताओं को हार्दिक नमन करता हूँ।

भारत के लिए गणतंत्र दिवस मात्र एक आयोजन नहीं है बल्कि हमसभी भारतीयों के लिए गौरव व सम्मान का प्रतीक है। लाखों स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान और कई तरह के कठोर संघर्ष के बाद 15 अगस्त 1947 को अंग्रेजी औपनिवेशिक शासन से भारत को आजादी मिली, परन्तु 26 जनवरी 1950 को आज ही के दिन देश सही मायने में स्वतंत्र हुआ क्योंकि इसी दिन से हमारा संविधान लागू हुआ, हमें पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। हमें इस बात का भी गर्व है कि हमारा संविधान विश्व

का सबसे बड़ा एवं विस्तृत लिखित संविधान है, जिसे बनने में 2 वर्ष, 11 महीने और 18 दिन का समय लगा। मैं आज के इस पावन अवसर पर डॉ. भीमराव आंबेडकर को विशेष श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहूँगा जिनकी अध्यक्षता में संविधान निर्माण का कार्य संपन्न हुआ, हमारा देश स्वतंत्र से गणतंत्र बन गया।

गणतंत्र का अर्थ है 'सर्वोच्च शक्ति'। गणतांत्रिक देश के प्रत्येक नागरिक को अपना जन प्रतिनिधि चुनने का विशेषाधिकार प्राप्त है। हमारा संविधान भारत के प्रत्येक नागरिक के समानता के अधिकार को सुनिश्चित करता है। साथ ही यह दिन हमें देश के प्रति हमारी प्रतिबद्धता व ज़िम्मेदारियों को भी याद दिलाने वाला दिन है। हमारा देश विभिन्न विचारधाराओं का संगम स्थल है व इसकी एक इकाई हमारा विश्वविद्यालय है, प्राध्यापक, प्रशासनिक अधिकारी तथा कर्मचारी हर व्यक्ति किसी न किसी विचारधारा से प्रभावित एवं सम्बंधित होता है और प्रत्येक नागरिक के इस अधिकार की हमारा संविधान ही रक्षा करता है। इस मंच से मैं आप सबसे यह आग्रह करता हूँ कि हमें अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता के साथ अपने दायित्वों के प्रति भी सम्पूर्ण समर्पण का भाव रखना चाहिए, हमारे विचार, कर्म तथा आचरण राष्ट्र निर्माण में समर्पित होने चाहिए। मेरी समझ में यदि राष्ट्र है तो हम है, और हम है यह समाज है, हमारा परिवार है, सब कुछ एक दुसरे में गुँथा हुआ है। विकास का यही एक मानक है कि हम सब एक कड़ी में देश हित के कार्यकलापों से जुड़े रहें। इस समय इस 'हम' को ठीक-ठीक परिप्रेक्ष्य में समझने की विशेष आवश्यकता है। इस अवसर पर हम पुनः यह प्रण लें कि हम तमाम विपरीत परिस्थितियों में भी देश की संप्रभुता की रक्षा करते रहेंगे। संविधान के सभी प्रावधानों, मुख्य रूप से इसमें कही गयी समानता की बात, इसके न्यायप्रिय, धर्मनिरपेक्ष एवं लोकतांत्रिक चरित्र की रक्षा करना हमारा कर्तव्य ही नहीं हमारा राष्ट्रधर्म भी है।

पिछले एक वर्ष से सम्पूर्ण विश्व कोविड-19, वैश्विक महामारी के प्रकोप को झेल रहा है, गत वर्ष पूरे विश्व के लिए कठिन एवं चुनौतीपूर्ण वर्ष रहा है जिसकी

वजह से समस्त मानवजाति के जीवन जीने के मानक बदल गए हैं। आज भी विश्व के कई बड़े एवं वैज्ञानिक तथा तकनिकी संसाधनों से संपन्न देश इस महामारी से उबर नहीं पाए हैं। इस बीमारी ने विश्वभर में कई नयी चुनौतियों को लाकर रख दिया है। हमारा देश भी इस बीमारी के प्रकोप से नहीं बच पाया किन्तु हमारे लिए यह राहत और संतोष की बात है कि अन्य देशों की तुलना में हमारा देश इस वैश्विक महामारी से निपटने में ज्यादा सफल रहा। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के सजग नेतृत्व में कई देशव्यापी जागरूकता अभियान चलाये गए जिसके फलस्वरुप देश को यह सफलता मिली।

विश्वविद्यालय परिवार के लिए भी गत वर्ष की परिस्थितियाँ बहुत ही चुनौतीपूर्ण रही हैं। परन्तु हमने इस महामारी से उत्पन्न चुनौतियों को भी स्वीकार किया। हमने सभी मोर्चों पर इसका डटकर सामना किया और बहुत हद तक हमें सफलता भी मिली। इसके लिए मैं आप सभी को बधाई देता हूँ। सभी विभागों के प्राध्यापकों ने सफलतापूर्वक ऑनलाइन कक्षाएँ लीं, सत्रीय परीक्षा एवं छात्रों से असाइनमेंट भी जमा करवाए और समय पर परीक्षा परिणाम भी सम्बंधित विभाग को जमा किये। हमने विश्वविद्यालय कलेंडर का अनुपालन करते हुए अपनी तय तिथि पर विश्वविद्यालय के 18वें दीक्षांत समारोह का सफलतापूर्वक आयोजन किया। एम. ए प्रथम सत्र के लिए छात्रों को फॉर्म भरवाने से लेकर प्रवेश के लिए मौखिकी का आयोजन, कक्षा में प्रवेश तथा ऑनलाइन कक्षा शुरू करने जैसे कई चुनौतीपूर्ण कार्यों को सुचारू रूप से संपन्न किया। इस वर्ष भी हम कल से यानी 27 जनवरी से तृतीय सत्र की परीक्षाएँ शुरू करने जा रहे हैं। इसके साथ ही कॉलेजों में भी विभिन्न सत्रों के लिए परीक्षाएँ शुरू हो जायेगी। मुझे पूरा विश्वास है कि गत सत्र की भांति इस सत्र में भी आप सभी परीक्षा सम्बन्धी अपने कर्तव्यों का पालन पूरी निष्ठा एवं समर्पण के साथ करेंगे। इस बीच हमने सफलतापूर्वक RGUMPET यानि एम. फिल एवं पीएच.डी हेतु प्रवेश परीक्षा संपन्न करा ली है। मुझे पूरा विश्वास है कि हम निश्चित समय के भीतर इसके परिणामों की घोषणा करेंगे ताकि शोधार्थी तय समयानुसार अपनी कक्षा प्रारंभ कर सके। हमारी योजना मई–जून के महीने तक चतुर्थ सत्र

(कॉलेजों में षष्ठ सत्र) की परीक्षा को संपन्न कराने की है, जिससे कि हम अपने नए सत्र की शुरुआत सितम्बर के महीने से शुरू कर सके। हम सत्र पद्धति को सितम्बर के महीने तक पुनः पटरी पर लाने के लिए प्रतिबद्ध हैं और जैसा की आप सबको विदित है, इसके लिए हमें बहुत मेहनत करनी होगी।

देश में जिस तरह की स्थिति बन रही है, मुझे पूरा विश्वास है कि हम कोविड-19 को बहुत जल्द परास्त करेंगे। 16 जनवरी से प्रारंभ हो चुके देशव्यापी कोवैक्सिन टीकाकरण अभियान का पहला चरण सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है। भारत के प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी के सक्षम तथा दूरदृष्टि वाले नेतृत्व में देश के वैज्ञानिकों ने कोवैक्सिन का आविष्कार किया है, यह भी हम सभी के लिए सम्मान एवं गर्व की बात है।

इसके बावजूद हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इस महामारी के कारण पिछले एक वर्ष में हमने कई महत्वपूर्ण ज़िन्दगियों को खोया है। आम जनता के साथ-साथ मोर्चे पर तैनात चिकित्साकर्मियों, पुलिसकर्मी एवं सफ़ाईकर्मियों ने अपनी जान गवाई। देश के उन सभी वीर संतानों को मेरी श्रद्धांजलि और मैं उनकी आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ। मृतकों के परिजनों को ईश्वर शक्ति दे कि वे दुःख की इस घड़ी में अपना धीरज और हिम्मत बनेये रखें, ऐसी मेरी ईश्वर से प्रार्थना है। इस बीच विश्वविद्यालय परिवार ने भी अपने कई कर्मठ एवं ईमानदार सज्जन साथियों को खोया है, हमें दुःख है कि हमारे कई साथी हमारे बीच नहीं रहे। मैं अपने दिवंगत साथियों को भी अपनी सप्रेम श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ, भगवान उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें। विश्वविद्यालय के नियमों के अनुसार उनके परिवारों की हम कैसे मदद कर सकते हैं, इसपर हम विचार कर रहे हैं।

साथियों! मैं समझता हूँ और जानता हूँ कि हम जो कुछ अब तक अच्छा कर पाए हैं और कर रहे हैं वह आप सबके सम्मिलित प्रयत्नों का ही नतीजा है। तमाम विपरीत परिस्थितियों के बावजूद गत वर्ष हमने कई ऊँचाइयाँ प्राप्त की हैं चाहे वह केंद्रीय विश्वविद्यालयों की रैंकिंग में हमारे विश्वविद्यालय का 83%

अंको के साथ दूसरा स्थान प्राप्त करना हो या अकादमिक कलेंडर के अनुसार प्रगति करना जैसे कई मोर्चों पर हमें सफलता मिली है। आप सबको बताते हुए हर्ष की अनुभूति हो रही है कि इस वर्ष भी हिमालयन विश्वविद्यालय समूह द्वारा हमारा विश्वविद्यालय सम्मानित किया गया। ये उपलब्धियाँ किसी एक अकेले व्यक्ति के बूते नहीं है, एक अकेला व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता। यह टीम वर्क है और हम जितने संगठित तरीके से, एकजुटता के साथ अपने काम को आगे बढ़ाएंगे; उतनी ही तेजी के साथ सही दिशा में इसे आगे ले जा सकेंगे। विश्वविद्यालय हमारा परिवार है। यह हम सबकी संस्था है। इससे हमारी पहचान जुड़ी हुई है। इसकी पहचान जितनी ऊँची होगी, उतनी ही हमारी भी पहचान ऊँची होगी। यह हमारे गर्व का कारण है। आप सबके सहयोग से हम अभी तक सही दिशा में आगे बढ़े हैं और मैं भरोसा करता हूँ कि आप सबके सहयोग से ही हम इस वर्ष भी काफी कुछ कर पाएँगे। मुझे उम्मीद है कि सितंबर के महीने से हम एक नयी शुरुआत करेंगे। अतः आप सबको इस भाव के साथ पुनः गणतंत्र दिवस की बधाई और शुभकामनाएँ देता हूँ –

उठे जहाँ भी घोष शांति का, भारत स्वर तेरा है,

धर्म–दीप हो जिसके भी कर में, वह नर तेरा है।

तेरा है वह वीर, सत्य पर जो अड़ने जाता है,

किसी न्याय के लिए प्राण अर्पित करने जाता है ।

मानवता के इस ललाट–चन्दन को नमन करूँ मैं?

किसको नमन करूँ मैं भारत! किसको नमन करूँ

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' जी की इन्हीं पंक्तियों के साथ भारतमाता को नमन,

जयहिंद ! जय अरुणाचल !

कुलपति

राजीव गाँधी विश्वविद्यालय, दोइमुख